शोध-सार

प्रस्तुत लघु शोध हेतु चयनित अवधि (1857-1900) आधुनिक भारतीय नवजागरण की एक विशेष अवधि है। इस कालावधि में भारतीय जन-मानस में जिस राजनैतिक चेतना का स्फुरण हुआ, उसके मूल में समाज, सांस्कृतिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक, आर्थिक और उपनिवेशवाद से जुड़े कारणों के साथ ही साहित्यक कारणों की विशेष भूमिका थी। विशेष रूप से इस कालावधि में हुए अनुवाद कार्य ने सारे भारत के जन-मानस को नवीन प्रेरणा से भरने का कार्य किया। अनुवाद के ऐतिहासिक पक्ष का अध्ययन-विवेचन करने पर पता चलता है कि इस काल में सभी भारतीय भाषाओं में पाश्चात्य भाषाओं से और परस्पर अनुवाद कार्य किया गया, लेकिन सबसे अधिक अनुवाद हिंदी में हुआ। हिंदी में विभिन्न भाषाओं के साहित्य और अन्य विषयों का अनुवाद किया गया। इस कार्य के मूल में आधुनिक भारत के निर्माण के तत्व छिपे थे। एक प्रकार से अनुवाद के माध्यम से भारतीय समाज को आधुनिक विचारों से परिचित करवाया गया। इससे भारत के लोगों के बौद्धिक ज्ञान में वृद्धि हुई। अनूदित साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हुए भारतीयों को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व राजनैतिक पक्षों के नवीन रूपों से परिचित करवाया, जिससे लोगों के अंदर इन पक्षों से संबंधित चेतना का विस्तार हुआ। आँकड़ों पर ध्यान दिया जाए तो हिंदी में पाश्चात्य साहित्य से काव्य में 13, नाटक में 10, निबंध में 07, कहानी में 01, उपन्यास में 04, जीवन चरित में 01 और अन्य विधाओं में 08 अनुवाद हुए। भारतीय भाषाओं के साहित्य से काव्य के अंतर्गत संस्कृत भाषा से 14, उर्दू भाषा से 05, धार्मिक व पौराणिक रचनाओं के 15 अनुवाद किए गए। नाटक के अंतर्गत संस्कृत भाषा से 21, बांग्ला भाषा से 14, मराठी भाषा से 02, गुजराती भाषा से 01 अनुवाद उपलब्ध है। उपन्यास के अंतर्गत बांग्ला भाषा से 39, मराठी भाषा से 02, गुजराती भाषा से 02, उर्दू भाषा से 07 अनुवाद किए गए। निबंध विधा के अंतर्गत उर्दू भाषा से

01, मराठी भाषा से 01 अनुवाद मिलता है। इस काल में जीवन चरित के 04, शैक्षिक सामग्री के 14, चिकित्सा शास्त्र से 04, ज्योतिष शास्त्र से 03 और नीतिग्रंथों के 03 अनुवाद किए गए। इसके अलावा 10 अनुवाद ऐसे उपलब्ध हुए, जिनकी विधा का पता नहीं चल सका। इस काल में 46 दो-भाषिया अखबार प्रकाशित होते थे। ये सभी अखबार हिंदी व उर्दू भाषा में प्रकाशित होते थे। लघु शोध की अवधि में नवजागरण काल में इस अनूदित साहित्य व दु-भाषी अखबारों ने भाषाई विविधता से पूर्ण भारतीय समाज की भाषाई समस्या को हल करते हुए वैचारिक आदान प्रदान संभव बनाया। इस प्रकार अनुवाद ने भारतीय समाज के यथार्थ रूप को नवजागरण काल में जनता के सामने रखा और भारतीय जीवन में व्याप्त अच्छाइयों- बुराईयों से समाज को परिचित करवाया।

नवजागरण काल के दु-भाषी सामाचारपत्रों ने अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीतियों को प्रकाशित किया। इन अखबारों ने ब्रिटिश शासन में भारतीय जनता पर किए जाने वाले शोषण और अत्याचारों से समाज को परिचित करवाया। यह अवश्य है कि उस समय अंग्रेजी शासन होने के कारण तत्कालीन अखबार अंग्रेजों की गतिविधियों व उनके द्वारा किए जाने वाले शोषण को अप्रत्यक्ष रूप से ही जनता के समक्ष रखते थे। नवजागरण काल में प्रकाशित होने वाले मालवा अखबार, अखबार रत्नप्रकाश, अखबार ग्वालियर हिंदी और उर्दू भाषाओं में समानांतर रूप से प्रकाशित होते थे। ये अखबार भारत के साथ-साथ विदेशी खबरों और उनकी गतिविधियों का भावानुवाद भारत की जनता को साम्राज्यवाद के विरूद्ध जगाने के लिए प्रकाशित करते थे। इनका महत्व यह है कि इन अखबारों ने अनुवाद के माध्यम से ब्रिटिश सरकार की दमनात्मक नीतियों, आर्थिक, प्रशासनिक, न्यायिक भ्रष्टाचार आदि से संबंधित खबरों को दो भाषाओं के माध्यम से जनता तक पहुँचाया। वहीं उस काल के अनूदित नाटकों ने साम्राज्यवाद के विकास व उसके विभिन्न लक्षणों जैसे- बाजार का विस्तार, सामाजिक व राजनैतिक कूटनीतियों आदि के विभिन्न रूपों को जनता के समक्ष रखा। अनूदित साहित्य ने जनता को यह बताया कि शासक अपने साम्राज्य के विस्तार और शासन को बनाए रखने के लिए जनता पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार करने के साथ ही, भय, दंड तथा शारीरिक व मानसिक शोषण करते हैं, ताकि जनता इतनी कमजोर हो जाए, कि वह शासक का किसी भी तरह से विरोध न कर सके। अनूदित साहित्य ने भारत के लोगों को जिन साम्राज्यवादी तत्वों से परिचित करवाया, उन सभी तत्वों का जनता ने ब्रिटिश शासन में वास्तविक और व्यावहारिक रूप देखा। यह भी ध्यान देने की बात है कि उस काल में देश-विदेश में साम्राज्यवादी ताकतों के विरुद्ध होने वाले विद्रोह की खबरों को भी उस समय के अखबारों ने दो भाषाओं में प्रकाशित किया। इन खबरों ने भारत के लोगों को अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक जुट होकर लड़ने के लिए प्रेरित किया। अखबारों ने रूस, फ्रांस और इंग्लैंड की साम्राज्यवादी

गतिविधियाँ और वहाँ के शासकों के अत्याचारों के विरुद्ध होने वाले विद्रोहों से जनता को परिचित करवाया। ये सभी खबरें भारत के अखबारों में प्रकाशित होती थीं। भारतीय अखबार विदेशों की खबरों का सीधे अनुवाद नहीं करते थे, अपितु वे अधिकांशत: भावानुवाद प्रकाशित करते थे।

नवजागरण कालीन अनूदित पाठों ने प्राचीन कालीन भारतीय समाज और ब्रिटिश कालीन भारतीय समाज की समाजिक स्थितियों से परिचित करवाया। ब्रिटिश काल में सेवक और स्वामी के संबंधों में कड़ुवाहट थी। अनूदित पाठों ने प्राचीन भारतीय समाज के सेवक और स्वामी के मधुर संबद्धों से समाज को परिचित करवाकर सेवक और स्वामी के बीच की दूरियों को कम करने का प्रयास किया। तत्कालीन समाज में स्त्रियों की सामाजिक व शैक्षिक स्थिती खराब थी। अनूदित पाठों ने एक तरफ महिलाओं के प्रति समाज के लोगों के दुराग्रह को दर्शाया, तो दूसरी तरफ महिलाओं की सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और साहित्यिक क्षेत्र में सक्रियता और उनके सशक्तीकरण से परिचित करवाकर महिलाओं को विकास का रास्ता दिखाया। तत्कालीन समाज में धार्मिक और जातिगत बुराईयाँ विद्यमान थीं। अनूदित पाठों ने इन समस्त बुराईयों से होने वाले नुकसान से परिचित करवाकर भारतीय समाज को इनसे दूर रहने के लिए प्रेरित किया, जिससे समाज में जातिगत और धार्मिक भेदभाव की भावना शिथिल हुई। उस समय के दु-भाषीय अखबारों ने समाज में शिक्षा के स्तर को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उस समय भारत में शिक्षक और छात्रों के नैतिक पक्ष पर विशेष बल दिया जाता था। सभी दु-भाषी अखबारों ने इस प्रकार की सामग्री और समाचार प्रकाशित किए। शिक्षा क्षेत्र में आए इस बदलाव ने शिक्षा के धार्मिक स्वरूप को बदलकर नैतिक करने की दिशा में पहल की। शिक्षा के कारण भारतीय समाज के लोग अपने राजनैतिक अधिकारों को समझने लगे।

नवजागरण काल में अनेक भाषाओं के साहित्य के अनुवाद हुए थे। अनूदित पाठों ने भारतीय समाज के लोगों को विभिन्न भाषाओं की रचनाओं और व्याकरण से परिचित करवाया। उन्होंने मुहावरों, कहावतों, अलंकारों की शक्ति से भी अवगत कराया। इसी के साथ स्वदेशी भाषाओं के प्रति प्रेम इस काल में सबसे अधिक प्रचारित हुआ। नवजागरण काल के इस भाषाई जागरण ने व्यक्ति के सोचने समझने की शक्ति को तीव्र किया। विभिन्न भाषाओं के ज्ञान से भारतीय समाज के लोगों में एक नवीन वैचारिक चेतना का विकास हुआ। इस वैचारिक चेतना से सम्पन्न अनूदित पाठों ने नैतिकता के पक्ष को पुष्ट करते हुए व्यक्ति को पाप कर्मों से बचने के लिए प्रेरित किया। इससे एक दूसरे के प्रति दुराग्रहों को त्यागने और बुरे कर्मों से दूर होने की प्रेरणा मिली। अनूदित पाठों ने भारतीय जनता को राजा और मंत्री के संबद्धों और शासन संचालन के विभिन्न पक्षों से परिचित करवाया। इससे भारतीय

जनता शासन और सरकार के स्वरूपों और कार्यप्रणालियों से परिचित हुई। उस समय कुछ विदेशी शासकों द्वारा भारतीय धर्म ग्रंथों का अनुवाद अपनी मातृभाषा में करवाया जा रहा था। इसका एक कारण तत्कालीन समय में भारतीय धर्मों के मूल स्वरूप तथा उसमें आई विकृतियों को जानना भी था, ताकि विदेशी लोग अपने धर्म को भारत में स्थापित करने में सहायता प्राप्त कर सकें। अनूदित पाठों के माध्यम से इस छिपे हुए उद्देश्य को जानने के बाद तत्कालीन समाज अपने धर्म के संरक्षण के लिए सचेत हुआ।

तत्कालीन दु-भाषी समाचारपत्रों में विदेशी शासकों के शासन के भ्रष्टाचार और उनके प्रति जनता द्वारा किए जाने वाले विद्रोहों की ख़बरों का उल्लेख भी बार-बार देखने को मिलता है। समाचारपत्रों से भारतीय जनता ने यह भी जाना कि उस काल में जहाँ भारत शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याओं से जूझ रहा था और कुछ लोग स्त्री शिक्षा का विरोध कर रहे थे, वही विदेशों में स्त्री शिक्षा के प्रति गंभीरता दिखाई दे रही थी। इंग्लैंड की सरकार महिलाओं की शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय खोलने पर विचार कर रही थी। इसके अलावा विदेशी लोग भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि करने के लिए अनेक वैज्ञानिक आविष्कार करने में लगे थे। तत्कालीन दु-भाषी अखबारों में प्रकाशित महिलाओं की शिक्षा और विज्ञान संबंधी समाचारों ने भारतीय जनता के दृष्टिकोण में बदलाव लाते हुए उसे वैज्ञानिक सोच विकसित करने के लिए प्रेरित किया। यह परिवर्तन जनता में स्वाधीनता की भावना और राजनैतिक चेतना जगाने वाला बना। अनुवाद की यह देन नवजागरण काल की विशेष उपलब्धि कही जा सकती है।

अनूदित साहित्य में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, वैचारिक आदि पक्षों से संबंधित सामग्री और तत्कालीन समाचारपत्रों ने भारतीय समाज के लोगों में राजनैतिक चेतना का विकास किया। इसने धीरे-धीरे भारतीय समाज को स्वाधीनता प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। ध्यान देने योग्य तथ्य यह भी है कि नवजागरण काल में राजनैतिक चेतना के मूल में सामाजिक, आर्थिक और भाषाई जागरण मुख्य था। इस आधार पर कहा जा सकता है कि अनूदित साहित्य ने नवजागरण काल में जनता में एक ऐसी समग्र चेतना विकसित की, जिसने राजनैतिक चेतना को सक्षम और सार्थक स्वरूप प्रदान किया। इसके प्रभाव से भारतीय जनता रूढ़िवादी विचारों को त्यागकर अंग्रेजी शासन का विरोध करने लगी। ब्रिटिश शासन में भारतीय जनता की स्थिती बहुत ही खराब थी। अनूदित साहित्य के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आता है कि साम्राज्यवादी शासन में जनता का शोषण होता है, क्योंकि इस शासन में जनता को किसी भी तरह के अधिकार नही प्राप्त होते हैं। नवजागरण में भारतीय जनता के पास किसी भी तरह के अधिकार नही थे। अनूदित पाठों के माध्यम से भारतीय जनता पाश्चात्य विद्वानों के विचारों से परिचित हुई। इन

विचारों में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना निहित थी। ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण भारतीय समाज कमजोर और बिखरा हुआ था। नवजागरण कालीन अनूदित पाठों ने इस बिखराव को दूर करके एक होकर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलन करने के लिए प्रेरित किया।

नवजागरण काल में भारतीय जनता को राजनैतिक अधिकार तभी मिल सकते थे, जब वह ब्रिटिश शासन से मुक्त हो सके। इसके लिए यह आवश्यक था कि भारत में साम्राज्यवाद विरोधी चेतना का विकास हो। इस काल के अनूदित साहित्य और दु-भाषी अखबारों ने भारतीय जनता में क्रांतिकारी वैचारिक चेतना का विकास किया, जिसका समन्वित परिणाम यह हुआ कि भारतीय जनता में अदम्य राजनैतिक चेतना उभरी और वह अपने अधिकारों को पाने के लिए आंदोलित हुई। नवजागरण कालीन अनूदित पाठों के माध्यम से आई राजनैतिक चेतना ने 1947 ई. में भारत को स्वतंत्र कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।